भूमण्डलीकरण एवं शिक्षक सशक्तीकरण

संजीव शुक्ला*

मानव सभ्यता के तीव्र विकास के साथ-साथ वर्तमान समय में विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न देशों को परस्पर निर्भर बना दिया है। वैश्वीकरण (ग्लोबलाइजेशन) स्वयं की अर्थ-व्यवस्था, संस्कृति, समुदाय आदि को विश्व समुदाय के लिए खोलना अथवा विश्व के अन्य देशों के साथ जोड़ना है। वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा संसार की विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं व समाज का समन्वय किया जाता है जिससे वस्तुओं व सेवाओं, सूचना प्रौद्योगिकी, पूँजी निवेश, शिक्षा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान आदि का इनके बीच आपसी प्रवाह हो सके। वैश्वीकरण की प्रक्रिया में विकास एवं प्रतिस्पर्धा साथ-साथ चलती है। आज हम देखते हैं कि शिक्षा का भी वैश्वीकरण हुआ है। आज हमारे देश को तीव्र गतिशील एवं परिवर्तनशील भौतिक, आर्थिक व सामाजिक पर्यावरण के साथ प्रभावी सामंजस्य बनाना आवश्यक हो गया है। देश की भावी युवा पीढ़ी को वैश्वीकरण की चुनौतियों का सामना करने व उसके योग्य बनने हेतु सामाजिक परिवर्तन के एक सक्रिय अभिकर्ता के रूप में शिक्षक की भूमिका एवं महत्त्व पहले से अधिक बढ़ गया है।

वैश्वीकरण के प्रभाव में शिक्षा की नयी आवश्यकताओं को जानने हेतु यहाँ कतिपय विषयों का बिंदुवार वर्णन करना अत्यधिक उचित होगा–

भूमण्डलीकरण ने शिक्षा में अतिशय उपभोक्तावाद, व्यवसायवाद तथा सांस्कृतिक अध्यारोपण की नयी समस्या प्रस्तुत कर दी है। इलेक्ट्रॉनिक प्रिंट तथा अन्य माध्यमों ने आज की कक्षाओं के बच्चों में विभिन्न संस्कृतियों के घालमेल, तरह-तरह के विज्ञापनों से उपजी नकारात्मकता, पश्चिमी सभ्यता एवं पश्चिमी जीवन शैली को अपनाने की बढ़ती प्रवृत्ति आदि अनेक कारणों से उनकी मूल्य प्रणाली में भारी बदलाव ला दिया है। इसलिए आज की कक्षाओं में प्रभावकारी अध्यापन हेतु शिक्षकों के सेवापूर्व व सेवाकालीन प्रशिक्षणों की विषयवस्तु व स्वरूप

* *प्रवक्ता* (बी.एड. विभाग), श्री गाँधी महाविद्यालय, सिंघौली, सीतापुर, उत्तर प्रदेश

में दोनों को समुन्नत बनाकर उन्हें प्रशिक्षित करना होगा। आज के शिक्षक को विद्यार्थियों को इस योग्य बनाने की आवश्यकता है कि वे विभिन्न संस्कृतियों को समझना-परखना सीखें, वास्तविकता व अफवाहों को समझें और उनमें से अपनाने लायक गुणों को ही ग्रहण करें। यह तभी होगा जब आज का शिक्षक स्वयं को सशक्त करे।

विज्ञान एवं टैक्नोलॉजी के अत्यधिक समुन्नत साधनों ने व्यक्तिगत जीवन तथा व्यावसायिक जीवन दोनों को जटिल बना दिया है। कक्षाध्यापन में कंप्यूटर, टेपरिकॉर्डर एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक साधनों का उपयोग करने, हार्डवेयर, सॉफ्ट्वेयर को अपनाने जैसे दायित्व बढ़ गए हैं। इससे शिक्षकों में नए कौशल लाने की आवश्यकता बढ़ गई है। उन्हें बनाने की विधियाँ खोजना है। इसलिए उनके प्रशिक्षण स्तर में सुधार लाकर उन्हें अधिक सशक्त बनाना होगा।

भूमण्डलीकरण के प्रसंग में औद्योगिकीकरण भी अधिक बढ़ गया है जिससे रोजगार व बेहतर जीवन की खोज में गाँवों से शहरों में आकर बसने की प्रवृत्ति बढ़ गई है और नगरीकरण की समस्या सामने आ गई है। इससे हमारी संयुक्त परिवार की संस्कृति टूट रही है और सूक्ष्म परिवार का नया विचार आ गया है। सूक्ष्म परिवारों में भी प्रगाढ़ संबंधों का अभाव देखा जा रहा है और सामाजिक विघटन की प्रवृत्ति बढ़ रही है। अत्यंत शहरीकरण ने जहाँ एक ओर सह-अस्तित्व और पारस्परिक सहिष्णुता बढ़ा दी है, वहीं दूसरी ओर पृथक् पहचान बनाए रखने, पर्यावरणीय समस्या, सुरक्षा व साधनों की कमी आदि अनेक समस्याएँ भी उससे बढ़ी हैं। देश में आंतरिक एवं बाह्य माइग्रेशन भी हो रहे हैं। इससे शालाओं के शैक्षिक वातावरण में बहु-संस्कृतिवाद एवं अंत:संस्कृतिवाद को समझने और परखने के अवसर बढ़ गए हैं। इसलिए छात्रों का प्रस्तुत विभिन्न संस्कृतियों, जीवन-शैलियों में पहचान कर ग्राह्य एवं अग्राह्य में भेद करना होगा। छात्रों में इस योग्यता को विकसित करने हेतु अध्यापन कला (pedagogy) में परिमार्जन करने की आवश्यकता है। यह तभी हो सकेगा जब शिक्षकों को नयी अध्यापन कला में पारंगत कर उन्हें अपेक्षाकृत अधिक सशक्त किया जाए।

आज शालेय शिक्षा, महाविद्यालयीन शिक्षा तथा विश्वविद्यालयीन शिक्षा प्रत्येक स्तर पर विषयवस्तु, अध्यापन आवश्यकताएँ तथा अध्यापकीय दृष्टिकोण सभी बदल गए हैं। ऊर्जा संरक्षण, पर्यावरणीय प्रदूषण एवं बचाव, जनसंख्या शिक्षा, रोग मुक्ति व रोग नियंत्रण के उपाय, सकारात्मक मूल्यों का विकास, मानवाधिकार का समादर, आदि नए विषयों का समावेश पाठ्यक्रम में हो गया है। पाठ्यक्रमों में आए इस परिवर्तन को प्रभावकारी ढंग से सामना करने हेतु शिक्षकों की दक्षता में अभिवृद्धि करनी होगी। इसके लिए उन्हें सशक्त बनाना होगा।

आज वैश्वीकरण के प्रभाव में शिक्षा और समाज दोनों के क्षेत्र में परिवर्तन आ गया है। नीति-निर्देशक सिद्धांतों में भी भारी बदलाव हो गया है। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षक आयोग (1996) के अध्यक्ष जे. डेलर्स व सहयोगियों के अभिमत में

शिक्षा के चार स्तंभ 'ज्ञान के लिए शिक्षा, कार्य के लिए शिक्षा, सह-अस्तित्व की शिक्षा तथा स्व-अस्तित्व की शिक्षा हैं।' इन चारों स्तंभों को पूर्ण करने योग्य बनने के लिए शिक्षा प्रणाली में आमूल-चूल परिमार्जन करना होगा। छात्रों को स्वाध्याय और विवेकशील चिंतक बनाने हेतु प्रेरित करना होगा और शिक्षक को स्वयं विवेकशील व शोधार्थी बनने की दक्षता प्राप्त करनी होगी। इस प्रसंग में शिक्षकों का विकास कर उन्हें अधिक सशक्त बनाना होगा।

ऑडियो और वीडियो टेक्नोलॉजी में आई क्रांति से अध्ययन, अध्यापन तथा प्रशिक्षण तकनीकों में अभूतपूर्व परिवर्तन आ गया है। अध्यापन सहायक सामग्री अब अधिक प्रभावपूर्ण हो गई है। टेलीकांफ्रेंसिंग, दूरवर्ती शिक्षा, कंप्यूटर आदि के बढ़ते प्रयोग ने अब शिक्षा अध्ययन-अध्यापन को अन्य व्यवसायों जैसा बना दिया है। एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली द्वारा Classroom 2000 के प्रयोग ने जिसमें कर्नाटक एवं मध्यप्रदेश के शिक्षकों को टेलीकांफ्रेंसिंग से प्रशिक्षण देकर, प्रशिक्षण की परंपरागत Cascade प्रणाली के स्थान पर एक बेहतर विकल्प प्रस्तुत कर दिया है और Pedagogy के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन का उदाहरण प्रस्तुत किया है। प्रशिक्षण की इन नयी तकनीकों से आज के शिक्षक को भली-भांति परिचित होना होगा और उनके प्रयोग में दक्षता पानी होगी तभी शिक्षक व्यवसायी सुदक्षता प्राप्त कर सकेगा।

शिक्षकों के व्यावसायिक प्रशिक्षण में कतिपय विशेष कार्यक्रमों के समावेश हेतु सुझाव दिए गए हैं। यशपाल समिति (1993) का सुझाव अत्यंत उपयोगी जान पड़ता है कि नर्सरी, पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक शिक्षकों के लिए भी विशेष बी.एड. प्रशिक्षण आयोजित किए जाएँ। बी.एड., एम.एड. प्रशिक्षणों की अवधि भी बढ़ाई जानी चाहिए। पाठ्यक्रम संचालित करने के भी सुझाव हैं।

इस प्रकार 21वीं सदी के वैश्वीकरण ने सभी आयामों यथा विषय-वस्तु, अध्यापन विधि, अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया, नवाचारी पेडागॉजी, अध्ययन-अध्यापन सामग्री, कक्षाध्यापन में हार्डवेयर-सॉफ्टवेयर का प्रयोग, प्रशिक्षण विधियाँ, व्यावसायिक रूप से राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सुदक्ष शिक्षकों की उपलब्धि संबंधी आवश्यकताएँ और चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं और इन चुनौतियों का सामना करने हेतु शिक्षकों के सशक्तीकरण को और अधिक प्रासंगिक बना दिया है।

उपरोक्त वर्णनात्मक विवेचन से स्पष्ट होता है कि भूमण्डलीकरण के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों के सशक्तीकरण के निम्नांकित प्रसंग उत्पन्न हुए हैं:

- बढ़ते औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप अप्रवासन व शहरीकरण से उत्पन्न चुनौतियों और उनके निराकरण हेतु रोजगारपरक व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने का कौशल विकसित करना।
- शैक्षिक टेक्नोलॉजी में आई क्रांति के फलस्वरूप कक्षाध्यापन में हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर व अन्य प्रभावकारी टेक्नोलॉजी

को उपयोग करने का कौशल विकसित करना, प्रशिक्षण की गुणवत्ता को स्वीकारना और तद्नुरूप स्वयं को अनुकूलित करना ।

- स्व-अस्तित्व और सह-अस्तित्व के लिए अधिगम के नवाचारी विचारों का पोषण करना और जीवन के लिए शिक्षा के स्थान पर जीवनपर्यंत शिक्षा को प्राथमिकता देना।
- प्रशिक्षण की नयी तकनीकों टेलीकांफ्रेंसिंग, दूरवर्ती शिक्षा और अन्य उपागमों के प्रयोग में स्वयं को पारंगत बनाना।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक प्रसार की दृष्टि से एक देश से दूसरे देश में शैक्षिक संस्थाएँ व शैक्षिक परिसर स्थापित करना। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु स्वयं को योग्य बनाने के लिए वैश्विक स्तर की शिक्षा ग्रहण कर स्वयं को समुन्नत करना ताकि विश्व स्तर की ऐसी माँग की पूर्ति की जा सके।
- यूनेस्को घोषणा के अनुसार मानवाधिकार, प्रजातंत्र, जीवनोपयोगी विकास व क्रांति का मूल स्तंभ शिक्षा होती है। इन मूल्यों की स्थापना में सहायक बनने के योग्य स्वयं को भाषायी कौशल तथा टेक्नोलॉजी कौशल में पारंगत करना।

अत: वर्तमान समय में यदि शिक्षक स्वयं को सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम रूप में प्रदर्शित करना चाहता है तो स्वयं के सशक्तीकरण के लिए उसे अपने सतत् व्यावसायिक विकास के साथ-साथ संचार व संप्रेषण तकनीक का पूर्ण ज्ञान होना तथा भारतीय संस्कृति के मूल्यों के अनुरूप शिक्षा का उचित संतुलन एवं सम्मिश्रण करना होगा तभी वह अपने शिक्षार्थियों के साथ न्याय कर सकेगा। इस दिशा में ठोस एवं सार्थक प्रयास अपेक्षित है।

संदर्भ

हुसैन, नौशाद, 2004, 'परम्परा से हटकर वेब आधारित शिक्षा', *भारतीय आधुनिक शिक्षा*, वर्ष-23, अंक-2

कुमार, हर्ष, 2004, 'शिक्षक सशक्तीकरण में तकनीकी ज्ञान की अनिवार्यता', *प्राइमरी शिक्षक*, वर्ष-29, अंक-4

शर्मा, मंजू, 2003, 'अध्यापक शिक्षा प्रणाली में सूचना एवं संचार तकनीकी का उपयोग', *एजुकेशनल हेराल्ड*, वोल. 34, अप्रैल-जून, 2003.

लहरी, जी.के., 2004 'पीडोगॉजिकल रिफॉर्मस थ्रू ट्रांजेक्शनल स्ट्रेटजीज़....' *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन*, फरवरी, 2004.

दुबे., जे.आर. एवं सिंह, कर्ण, 2008-09, *भौतिक विज्ञान शिक्षण*, गोबिंद प्रकाशन, लखीमपुर खीरी, पृ. 22 एवं 23.